>

Title: Regarding alleged derogatory statements made by Civil Society Members against MPs and Union Ministers.

MADAM SPEAKER: Now, we will take up matter of urgent public importance.

Shri Sharad Yadav.

श्री शरद यादव (मधेपुरा): अध्यक्ष जी, आप बताइए किस तरह आपने मुझे समय दिया है। आप कल मुझे वक्त दीजिए। मैं आपके पास आया था। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप अपनी बात बोलिये। Let us have order in the House please.

â€¦(व्यवधान)

श्री शरद यादव : अध्यक्ष जी, माननीय सदस्य तो बाहर जा रहे हैं। मैडम, बेहतर होगा कि आप कल मुझे मौका दीजिए।

अध्यक्ष महोदया : अभी आप बोल लीजिए। अभी सभी लोग उपस्थित हैं। Let's have order in the House, please.

श्री शरद यादव : अध्यक्ष जी, मैंने प्रणब बाबू से रात को बात की थी और आपने सुबह कहा था कि चार बजे आपको बोलने का समय मिलेगा। प्रणब बाबू ने देश के लिए अपनी जिम्मेदारी निभा दी है। लेकिन सारे सदन की जो जिम्मेदारी थी, वह ऐसे समय पर आ गई है कि बहुत से लोग खिसक गए हैं।...(व्यवधान) हमारी तरफ के लोग बैठे हैं।...(व्यवधान) माफ करना कुछ लोग वॉश रूम गए होंगे।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बोलिए शरद जी, आपके भाषण में चुम्बकीय शक्ति है, सब आ जाएंगे।

श्री शरद यादव : अध्यक्ष जी, कल बातचीत सुषमा स्वराज जी से लेकर सभी लोगों ने शुरू की थी। कुछ माननीय सदस्य उसमें अपनी बात और भावनाएं नहीं रख सके। मैं सुबह आपके पास गया था, प्रणब बाबू ने मुझे फोन किया और कहा कि बजट पास करना है और मैं भी मानता हूं कि संवैधानिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि बजट के बाद इस सवाल को आप लीजिए। लेकिन उस लिहाज़ से शाम हो गई है। लेकिन मेरे मित्र मैम्बर्स आज इस पर डटे हुए हैं। मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आज यह सवाल नहीं उठता। यह जो संसद हैं, यह जो संस्थाएं हैं, इनको बड़ी कठिनाई से हमने खड़ा किया है। कई तरह के दौर को पार करके हम लोग यहां खड़े हैं। 39-40 वर्ष से हम यहां हैं। कई सवाल बाहर खड़े होते हैं। एक तो जो 162 सांसद अपराधी हैं। मैं आपसे विनती करूंगा कि एक बात तो यह होनी चाहिए कि इनमें से राजनैतिक मामले कितने हैं, आंदोलन के मामले कितने हैं और अपराधी प्रवृत्ति के लोग कितने हैं? यह जिम्मेदारी किसी की नहीं है। यह जिम्मेदारी सबसे ज्यादा आपकी है। बाहर अकेले जंतर-मंतर पर लोगों ने नहीं कहा, अखबारों पर, इंटरनेट पर, टीवी पर यह सब चलता रहता है। मुझे इस बात की चिंता इसलिए होती है कि सदन का सम्मान यदि घटेगा तो फिर देश कहां जाएगा? किस तरफ जाएगा? समाधान तो यहीं हो सकता है। किसी संस्था में भी एबरेशन होती है। राम के राज में भी रावण थे। कृष्ण के राज में भी कंस और दुर्योधन थे। आज भी मैं नहीं कह रहा हूं कि सदन में बिलकुल साफ छवि के लोग आए हैं। कई बार ऐसे लोग आए हैं, जिन्हें नहीं आना था। लेकिन इसके मायने यह नहीं है कि इस संस्था का, जिसके पहले इस देश में कोई संस्था नहीं है। परमात्मा के बाद यह अंतिम सत्य है और सबसे ज्यादा शक्ति और सामर्थ्यवान यह सभा है। एक ट्रैंड लगातार चल रहा है। जबसे भ्रष्टाचार का आंदोलन चला है तबसे सबसे ज्यादा इस संसद ने और संसद से हम लोगों ने जेपीसी के लिए एक सत्र बंद किया। इससे जो ट्रेजरी बेंचेज हैं, वह बहुत परेशान रहीं। इतनी लड़ाई हुई कि एक सत्र हम लोगों ने बंद रखा और जेपीसी बनी। सारी पार्टियों ने जो विरोध में बैठी हैं, सभी ने सभी जगह जुलूस निकाले, डिमॉन्स्ट्रेशन किया। कई जगह लाठी चार्ज हुई। हम लोगों ने भी रैलियां निकालीं। यह भ्रष्टाचार की लड़ाई इतनी ऊपर तक गयी कि 27 लोग जेल में बंद हुए। 27 लोग कॉरपोरेट्स हैं, हमारे साथी हैं।

महोदया, रात को एक बहस में एक टीवी वाला बोल रहा था कि अच्छा कानून कैसे बन सकता है जब यहां कनिमोझी हों, सुरेश कलमाड़ी हों। किसी ने अगर गलत काम किया है तो कोई और संस्था ने नहीं, बल्कि इसी संस्था ने, हम लोगों ने उनके खिलाफ कदम उठाए हैं। क्या वक़ीलों, मास्टरों, जज़ों की कोई संस्था बता सकती है कि उन्होंने कभी किसी को निकाला हो या कभी कहा है कि हम लोगों ने कोशिश की और निकाल नहीं पाए? अकेली यही संस्था है। ...(व्यवधान)

महोदया, आपके आसन पर सोमनाथ बाबू थे। इस सदन में ग्यारह सांसद पचास हजार, चालीस हजार, दस हजार इत्यादि ले रहे थे। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : शरद यादव जी, आप बोलिए।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : बाकी सभी माननीय सदस्य बैठ जाइए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : शरद यादव जी, आप बोलिए। आप इधर देखिए। आप इतनी जल्दी डिस्ट्रैक्ट मत होइए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरद यादव : महोदया, इस संस्था ने ग्यारह सांसदों को निकाल दिया। सारे सदन के लोग इसके विपरीत थे। तब भी आडवाणी जी ने विनती की थी कि इनका

ऐसा अपराध नहीं है कि इनकी मेम्बरी ले ली जाए। लेकिन, दोनों सदनों ने पूरी तरह से एक स्वर से, आम सहमति से, ग्यारह सांसदों को तेरह दिनों में निकाला। दुनिया में कोई संस्था नहीं है जिसने तेरह दिनों में इंसाफ़ किया हो।

महोदया, यहां आपकी जगह रवि राय जी बैठते थे। यह हमारा कानून हम लोगों ने नहीं लाया था। अब तो मैं यह मानता हूं कि यह जो एंटी डेफेक्शन लॉ है, इसको बिल्कुल खत्म करना चाहिए। इससे देश को कोई लाभ नहीं हुआ। जो पीठासीन अधिकारी हैं, वे इस कानून को नहीं मानते। इसमें इतनी ज्यादा ख़ामियां हैं कि यदि वे इसे नहीं मानते तो यह उनकी बेइमानी नहीं है, मजबूरी है। जहां संख्या कम है, मेम्बर कम है तो यह सूबा चलाना है या नहीं, देश चलाना है या नहीं? यहां रवि राय जी थे, उन्होंने सात सदस्यों की सदस्यता पुराने दल-बदल कानून से ले ली। इसी सदन में कुछ लोगों का नाम आ गया तो सोमनाथ बाबू ने कुछ लोगों को इस सदन में आने से रोक दिया।

मैं आपसे विनती करता हूं कि राजनीतिक ज़मात पर हमला करने का एक तरह से ट्रेंड चला हुआ है। मैं मानता हूं कि यह सर्वोच्च संस्था है और सर्वोच्च सत्ता भी यही है। सत्ता लोकतंत्र में निहित है। जनता उस पर हमला करती है। जनता उसकी ख़ामियों पर गुस्सा ज़ाहिर करती है और हमें इसे सहना चाहिए। हम लोग बर्दाश्त करते हैं। .. लेकिन इतनी दूर तक नहीं चले जायें कि कुछ लोग कहते हैं, फारुख साहब एक दिन कह रहे थे कि मेरे पिताजी ने गलती की कि मुझे राजनीति में ले आये। मेरे पिताजी भी फ्रीडम फाइटर हैं, मैं तो नहीं कहता कि मेरे पिताजी ने गलती की, क्यों गलती की। अरे, हम ईमानदारी से 40 साल से हिन्दुस्तान के किसान और मजदूर की, हिन्दुस्तान की बेकारी और बेरोजगारी की लड़ाई लड़ते आ रहे हैं। हम, जिसे फकीर कहते हैं, उस फकीर से कोई कम नहीं हैं। हम दिल्ली में रहते हैं, हममें से बहुत से सांसद हैं, एक सांसद दलपत सिंह परस्ते हैं, आजकल बी.जे.पी. में हैं, उनकी पत्नी यहां मर गई तो उनके पास अपनी पत्नी को वापस ले जाने के लिए पैसे नहीं थे तो आप दलपत सिंह परस्ते को याद नहीं करोगे? हम ईमान से जो जी रहे हैं, उनकी याद नहीं करोगे, बेईमानों की तरफ ही इशारा करोगे, उजाले की तरफ करोगे ही नहीं तो देश तो अंधेरे में डूब जायेगा, अंधेरे में बैठेगा, ऐसी निराशा फैलाई जा रही है।

भ्रष्टाचार पर भी 2-4 दिन की बहस करो तो हम कुछ बात कह सकते हैं, कुछ सुझाव दे सकते हैं। आज देश में सारी बीमारी 63 साल में सब आपके सामने खड़ी हो गई है, जाति है, रीजन है, रिलीजन है, किसी इलाके में किसी का कत्ल हो गया है, मुख्यमंत्री मारा गया है तो लोग कह रहे हैं कि नहीं, इसको फांसी मत दो तो देश में ऐसी परिस्थिति है। जैसे-जैसे आजादी बढ़ रही है तो कोई बुरी बात नहीं है, देश जाग भी रहा है और देश में बीमारियां आपके सामने खड़ी हैं, लेकिन हम उनसे आंख मूंदना चाहते हैं? अभी उत्तर प्रदेश का चुनाव हुआ है। उत्तर प्रदेश का चुनाव हुआ, लेकिन हम कभी सोचते नहीं है। मैं आपको बताऊं कि 50 से 60 फीसदी पैसा पार्टियों का और पार्टियां क्या करें, 50 से 60 फीसदी प्रत्याशियों का और पार्टियों का पैसा काहे में गया है, मीडिया में गया है। बड़ी चुनाव सुधार की बात होती है, चुनाव सुधार की बहुत बात होती है, लेकिन सबसे ज्यादा पैसा, थैली किसके पास जा रही है, कौन ले जा रहा है, यानि जो प्रत्याशी हैं, उससे भी ले रहे हैं, पार्टियों से भी ले रहे हैं, यानि कोई खराबी अकेले यहीं नहीं घुस गई है।

महात्मा जी ने सन् 1931 में लिखा था कि जब हिन्दुस्तान आजाद होगा तो आजादी के बाद, हमारे यहां बहुत पुरानी कहावत है, 'जस राजा, तस प्रजा', लेकिन आजादी के बाद यह कहावत उल्टी हो जायेगी, पलट जायेगी, जस प्रजा, तस एम.पी. होगी, जस प्रजा, तस एम.एल.ए. होगी और जस प्रजा, वैसी ही राज्य सरकार होगी, जैसी प्रजा है, वैसी ही केन्द्र सरकार होगी, यह कोई आकाश से नहीं टपक रही है। भारतीय समाज से ये सब चीजें निकल रही हैं, हम उस समाज को तो बदलना नहीं चाहते, उस समाज के ऊपर तो गौर नहीं करना चाहते, हम दिन-भर कहेंगे कि जाति-पाति नहीं होनी चाहिए और सैण्ट्रल हॉल में चले जाइये तो जातियों के ग्रुप बैठे हुए हैं और ग्रुप क्यों नहीं बैठें, वे इसलिए बैठते हैं कि खाने में, पीने में, मौत में हजारों साल की एक संस्था है। आपकी चर्चा से वह टूटेगी नहीं, लेकिन स्वामी दयानन्द जी ने, डॉ. लोहिया ने, जयप्रकाश जी ने इन सवालों पर लड़ने का काम किया है, इन सवालों को छेड़ने का काम किया है। हम तो यहां आकर खड़े हो गये हैं कि कभी हम इसको एड्रैस ही नहीं करते हैं कि यह बीमारी कहां से आई है। जाति-पाति नहीं होनी चाहिए तो फिर रास्ता क्या है। भई, कोई रास्ता तो बताना चाहिए कि एक ऐसा पांच परसेंट का, तीन परसेंट का इंसेंटिव दो कि जो अन्तर्जातीय शादी करेगा, अन्तर्धर्मी शादी करेगा, उसे आप नौकरी में विशेष अवसर देंगे। कोई आदमी किसी तरह का रास्ता अख्तियार करेगा तो मैंने तो एक बात कही, लेकिन कोई भी रास्ता, किसी तरह का भी रास्ता निकालो, सदन में चर्चा तो करो, आजकल राज गोली से नहीं चल रहा है, बोली से चल रहा है और जो लोग पार्लियामेंट पर हमला कर रहे हैं, मेरा उन पर कोई एतराज नहीं है, वे व्यक्तियों पर हमला कर रहे हैं, मेरा कोई एतराज नहीं हैं, वे सारे नाम लेकर कह रहे हैं, मेरे बारे में उन्होंने बोला, मुझे कोई एतराज नहीं है। वे तो कम बोलते हैं, हम लोगों के खिलाफ तो बहुत से लोग बोलते हैं। इतना असत्य बोलते हैं कि क्या बतायें, कुछ कह नहीं सकते। यदि आदमी में अपमान सहने की ताकत न हो, महात्मा बुद्ध से आनंद ने पूछा, भगवान बुद्ध तो आगम और निगम के परे मानते नहीं थे कि कोई चीज है, वह एथिक्स थे, आनंद ने पूछा कि बताइए कि सहज और सरल रास्ता बुद्ध बनने का क्या है? भगवान बुद्ध ने कहा कि जो आदमी अपने धर्म के लिए निरंतर संघर्ष करता रहे, अपमान सहता रहे, वह बड़ा आदमी हो जाएगा और उस बड़प्पन से जिसको पद और प्रतिष्ठा मिल जाए और वह पद और प्रतिष्ठा के बाद बौराय नहीं, संतुलित रह जाए, तो वह बुद्ध हो जाएगा। मैं यह कहता हूं कि कमियां हैं।

अध्यक्ष महोदया : अब आप समाप्त करिए।

श्री शरद यादव : महोदया, मैं जो बात कह रहा हूं, यह मेरी जिम्मेदारी नहीं है। मैं आपसे विनती करना चाहता हूं कि मैं तो एक सदस्य हूं, जबकि आप इस सदन की कस्टोडियन हैं, रक्षा, सुरक्षा आपके हाथ में है। हमारी जो खराबी हो, उस पर अटैक करो। आलोचना करो, कोई हर्ज नहीं है। जितनी आलोचना होगी, उतना ही मंथन होगा, मंथन से विष भी निकलेगा और अमृत भी निकलेगा। इसलिए मेरी आपसे विनती है कि यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप सुषमा जी से कहें या आप बंसल जी से कहें या आप स्वयं इस पर मानें कि किसी की आलोचना नहीं हो। यह बात इसमें हो कि संसद जो है, वह संस्था है, इलेक्शन कमीशन संस्था है, सुप्रीम कोर्ट संस्था है, इन पर कोई इस तरह का हमला न करे। इस तरह का हमला न करे कि ये टूटने के कगार पर पहुंच जाएं और इन पर लोगों का विश्वास टूट जाए। जनता का जिस दिन इस सदन पर विश्वास टूट गया तो मुझे लगता है कि अंधेरा ही अंधेरा है, कोई उसको रोक नहीं सकता है। इसलिए इसको रोकने की जिम्मेदारी मेरी नहीं है, आपकी है। मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करता हूं कि इस जिम्मेदारी को मेरी जगह आपको निभाना चाहिए था, सुषमा जी की जगह आपको निभाना चाहिए था, बसुदेव आचार्य जी की जगह आपको निभाना चाहिए था। मैं आपसे यही कहता हूं कि देर आये, दुरूस्त आये। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि किसी की आलोचना करना है। जिन लोगों ने व्यक्तियों की आलोचना की, उससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

अध्यक्ष महोदया : अब आप समाप्त करिए।

श्री शरद यादव : मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि सदन पर कोई भी मर्यादा रखे, संतुलित होकर लोक सभा के बारे में बोले, हमारे कृत्यों के बारे में बोले। लेकिन ऐसा न हो कि हमारे ऊपर पूरा विश्वास ही टूट जाए। इसलिए इस विश्वास को पूरी तरह से रीस्टोर करने के लिए, इस विश्वास को जमाने के लिए, इस विश्वास को

बनाये रखने के लिए, इस विश्वास को मजबूती से खड़ा रखने के लिए, जिससे लोकतंत्र खड़ा रहे। यह लोकतंत्र को खड़ा करने का सबसे बड़ा स्तंभ है। यह तंबू में सबसे बड़ा बंबू है। इसे टूटने मत दो, इसे लगाये रखो, इस टिकाए रखो।

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): महोदया, मैं आपका अत्यंत आभारी हूं कि एक इतने महत्वपूर्ण प्रश्न पर आपने मुझे बोलने की अनुमति दी है। यह प्रश्न केवल हमारी सरकार का नहीं है, यह प्रश्न किसी व्यक्ति का, जगदम्बिका पाल का नहीं है। आज जो बात माननीय शरद यादव जी ने उठायी है, आज वह बात इस सम्पूर्ण विधायिका के, इस सर्वोच्च सदन की मर्यादा के साथ है और न केवल इस सम्पूर्ण या इस सर्वोच्च सदन की उस मर्यादा का प्रश्न है, इस सदन की प्रोसिडिंग जो आप तय करती हैं कि इस सदन की प्रोसिडिंग कैसे चलेगी, कौन सा विषय स्वीकार किया जायेगा, कौन सा विषय स्वीकार नहीं होगा और चाहे सत्ता पक्ष में बैठे लोग हों, चाहे विपक्ष के लोग हों, जो एजेंडा आप स्वीकार करती हैं, उसी एजेंडे पर आपकी अनुमति से यह सदन चलता है। अगर आज उस कार्रवाई पर भी प्रहार किया जाये, तो मैं समझता हूं कि दुनिया के शायद किसी मुल्क में अगर इस तरह का कोई, जो लोकतांत्रिक प्रक्रिया के सर्वोच्च सदन के उस मंदिर पर जिस तरह से सिविल सोसाइटी के नाम पर एक लगातार प्रहार किया जा रहा है, मेरे जैसे सार्वजनिक जीवन के लोग इस नाते दुखी हैं और इसलिए मैं इस बात को कहना चाहता हूं। आज उस सवाल को किस नाम पर कि लोकपाल बिल सदन पारित करे। उस लोकपाल बिल को पारित करने के लिए जब माननीय अन्ना जी जन्तर-मन्तर पर बैठे उसी समय हमारी सरकार ने एक मंत्रिपरिषद के समूह के साथ उनकी बैठक की। एक सिविल सोसाटी, पहली बार हमने इस बात के लिए आलोचना भी सुनी। ...(व्यवधान) क्यों सिविल सोसाटी के पांच लोगों को ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : कृपया अब आप समाप्त करिए।

श्री जगदम्बिका पाल : मैं अभी कह रहा हूं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप एसोसिएट कर लीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री जगदम्बिका पाल : आज संसद सदस्यों पर ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): शरद जी ने जो सवाल उठाया। ...(व्यवधान) सर्वसम्मति से इसकी निंदा करें। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यह बोल रहे हैं। इसके बाद मैं आपको बोलने का मौका देती हूं।

श्री जगदम्बिका पाल : आदरणीय अध्यक्षा जी, आज जिस बात को लेकर कह रहे हैं, मैं उस की बात नहीं कर रहा हूं। मैं कह रहा हूं कि उस मंच से कहा गया कि आज इस सदन में आईपीएस नरेन्द्र जी की हत्या पर चर्चा नहीं होती है। शरद पवार जी पर चर्चा होती है। आपने जीरो अवर में नरेन्द्र जी की हत्या पर बोलने के लिए मुझे अनुमति दी। मैंने चर्चा की। अगर इस तरह से कोई चर्चा होती है उस पर भी कोई हमला हो रहा है। अगर स्पीकर के कन्डक्ट पर भी हो रहा है तो क्या देश में लोगों को आज इजाजत दी जाए कि संपूर्ण लोकसभा जिसकी स्पीकर, कस्टोडियन आप हैं क्या उनके द्वारा भी कार्रवाई पर चर्चा हो। आज यह कहा जाता है कि सदन में कौन लोग बैठे हैं? यह कहा जाता है कि सदन में 162 अपराधी सांसद और मंत्री के रूप में बैठे हैं।...(व्यवधान) शायद उन्हें इस बात का एहसास नहीं है। शायद एक दिन गेट नम्बर एक पर खड़े हो जाएं, 2/3 से ज्यादा सांसद सदस्य फेरी से आते हैं। ये अपना पूरे जीवन समर्पित भाव से अपने क्षेत्र में लगे रहते हैं। यहां उनके पास कार नहीं है। इसके बावजूद वह अपनी संपूर्ण विधायिका की उत्तरदायित्व की जिम्मेदारी के लिए इस सदन में ईमानदारी से काम करते हैं। आज हम तो इसका उल्लेख नहीं करते हैं। ...(व्यवधान) अगर वह भ्रष्टाचार की बात करते हैं, वह चुनाव सुधार की बात करते हैं तो हम स्वागत करते हैं। हमारी सरकार ने, प्रधानमंत्री जी ने 23 मार्च को बैठक की। अभी 23 मार्च को ऑल पार्टी मीटिंग बुलाई गई कि किस तरह से सहमति बनें ताकि लोकपाल बिल दोनों हाउस से पास हो। मैं समझता हूं कि जब दुबारा हाउस फिर बैठेगा तो हमारी सरकार कटिबद्ध है कि लोकपाल बिल को पारित कराएंगे लेकिन मैं एक अनुरोध करना चाहता हूं। जहां सरकार लगातार इस बात के लिए लगातार प्रयास कर रही है कि उस लोकपाल बिल को दोनों सदनों में पारित कराएंगे। हम भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने और चुनाव सुधार की बात कर रहे हैं। आप भ्रष्टाचार के खिलाफ और चुनाव सुधार की बात कर रहे हैं। आप कौन-सी चुनाव सुधार की बात कर रहे हैं? जब वोट पड़ेगा तो वोट डालने के बजाय वे पुणे जाने की तैयारी करेंगे और चुनाव सुधार की बात करेंगे।

अध्यक्ष महोदया : बस हो गया। अब आप समाप्त करिए।

श्री जगदम्बिका पाल : अध्यक्ष महोदया, यह इतनी गंभीर बात है कि आज इस लोकसभा पर हमला हो रहा है। यह हमला केवल मेरी सरकार पर नहीं है। ...(व्यवधान) यह हमला केवल किसी सदस्य पर नहीं है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप जल्दी से समापत करिए।

श्री जगदम्बिका पाल : मैं खत्म कर रहा हूं। आज जिस तरीके की घटनाएं संपूर्ण सदन में हो रही हैं। आज उस स्टेटस रिपोर्ट में आया है कि दो-दो जो संस्थाएं चला रहे हैं, नवज्योति फाउंडेशन और इंडिया विजन फाउंडेशन, अन्ना सोसायटी के एक सदस्य को पचास लाख रूपया मिला और इसलिए मिला कि बीएसएफ, सीआईएसएफ, आटीबीपी और सीआरपीएफ एवं अन्य पुलिस संगठन के बच्चों को नःशुल्क कम्प्यूटर की शिक्षा दी जाएगी। वे ईमानदारी की बात करते हैं। आज पटियाला कोर्ट में स्टेटस सिम्बल रिपोर्ट पेश हुआ है कि उन दोनों एनजीओज पचास लाख रूपये का दुरूपयोग किया है। ...(व्यवधान) आज पुलिस के बच्चों को कोई कम्प्यूटर की शिक्षा नहीं दी गई है। आज अन्ना टीम के लोग इस तरह से बात कर रहे हैं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : अब आप दारा सिंह चौहान जी को बोलने दीजिए।

श्री जगदम्बिका पाल : हमने इसी हाउस में अन्ना जी का सम्मान किया। ...(व्यवधान) उनको चिट्ठी लिखी गई।...(व्यवधान) हम लोगों ने उनकी तीनों बातें

मानी।...(व्यवधान) हमने हाउस बनाकर मानी।

अध्यक्ष महोदया : मुलायम सिंह यादव जी बोलिए।

श्री मुलायम सिंह यादव (मैनपुरी): शरद यादव जी ने सवाल उठाया है वह सबसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि संसद एक सर्वोच्च संस्था है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता यही है। इस पर अगर कोई नाजायज हमला करता है तो उसे क्षमा नहीं करना चाहिए। यह पूरा सदन जब आप पर छोड़ते हैं, मैं भी सहमत हूं लेकिन कोई न कोई कार्रवाई किसी तरह की हो जिससे इस संस्था पर कोई हमला न कर सके। इसे केवल प्रस्ताव पास करके नहीं छोड़ा जाए। यह बाकायदा प्रिविलेज है। इसे विशेषाधिकार समिति में दिया जाए। उन्हें बुलाया जाए और इसी सदन के अंदर हाजिर किया जाए। आपकी तरफ से यह निर्देश जाना चाहिए। मैं चाहता हूं कि इसमें पूरा सदन एकमत हो।...(व्यवधान) कौन है, क्या है, यह सवाल नहीं है। इसलिए आप इसे विशेषाधिकार का मामला समझकर तत्काल उन्हें यहां बुलवाइए। जिन लोगों ने इस संस्था पर हमला किया है, उन्हें इसी सदन में मुजरिम बनाकर खड़ा करना चाहिए। उत्तर प्रदेश विधान सभा में ऐसे लोग बुलाए गए हैं। हम वहां विपक्ष के लीडर थे। उन्होंने वहां आकर खड़े होकर अपना बयान दिया था। बाद में सदन ने जो फैसला दिया, वह अलग बात है। इसलिए उन्हें बुलाइए, सदन में मुजरिम की तरह खड़ा कीजिए।

श्री दारा सिंह चौहान (घोसी): अध्यक्ष महोदया, कल से श्रीमती सुषमा स्वराज और माननीय शरद यादव जी द्वारा जो वक्तव्य दिए जा रहे हैं, उसकी निरंतरता में आज जो चर्चा हो रही है, यह बहुत महत्वपूर्ण है। आज इस देश के कुछ लोगों द्वारा संसद और सांसदों पर अमर्यादित भाषा का प्रयोग हुआ है। मैं कहना चाहता हूं कि अन्ना टीम के बारे में चर्चा हो रही थी। उस टीम के लोग कहते हैं सिविल सोसाइटी, ...(व्यवधान) *

MADAM SPEAKER: Please do not use unparliamentary words. Please expunge them.

श्री दारा सिंह चौहान : पार्लियामैंट जो सबसे सर्वोच्च संवैधानिक संस्था है, उस पर अमर्यादित भाषा का प्रयोग किया गया। इसे पूरा देश देख रहा है। संसद का हर सांसद जो देश की 15 लाख से 25 लाख जनता का प्रतिनिधित्व करता है, इस कारण पूरे देश की जनता का अपमान है, क्योंकि उस जनता को गाली दी गई है, उस जनता का अपमान किया गया है। इसलिए स्पीकर मैडम, मैं आपका संरक्षण चाहता हूं और कहना चाहता हूं कि भारत का लोकतंत्र दुनिया के अन्य देशों के लिए रोल मॉडल बना हुआ है, दुनिया की सबसे बड़ा डोमोक्रेटिक कंट्री है। आज देश के पूंजीपतियों के इशारे पर इस देश के लोकतंत्र को तहस-नहस करने की साजिश की जा रही है। मैंने पहले भी कहा कि संविधान से ऊपर कोई नहीं है। जिस संविधान को बाबा साहेब ने बड़े संघर्ष और मेहनत के बाद बनाया, जिस संविधान ने गरीब, बेजुबान को जुबान दी, वे बेजुबान जो पहले लोगों की बात सुना करते थे, आज जब यहां उनकी बात सुनी जा रही है, तो लोगों को तकलीफ हो रही है। इसलिए उस जुबान को बंद करने, लोकतंत्र के खात्मे की साजिश हो रही है। आर्थिक भ्रष्टाचार की आड़ में इस देश की सर्वोच्च संवैधानिक संस्था और सांसदों को अपमानित करने की साजिश हो रही है। मैं आपका संरक्षण चाहता हूं। माननीय शरद यादव जी कह रहे थे, मैं भी जानता हूं कि इसी देश के पूर्व सांसद जो बिहार के पूर्व मंत्री भी थे, जब उनकी मृत्यु हुई तब उनके पूरे परिवार के पास बिहार जाने तक के लिए पैसे नहीं थे। किसी तरह कुछ लोगों ने मिलकर उनके पूरे परिवार को बिहार के धनबाद में पहुंचाया। मैं भी वहां मौजूद था। सांसदों की यह हालत है। लोकिन आर्थिक भ्रष्टाचार की आड़ में जिस तरह इस सर्वोच्च संस्था को अपमानित करने के लिए पूंजीपतियों की साजिश हो रही है, उसे यह संसद कभी बर्दाश्त करने वाली नहीं है।

18.00 hrs

अध्यक्ष महोदया : दारा सिंह जी, आपकी बात पूरी हो गयी, इसलिए अब समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदया, मैं कहना चाहता हूं कि केवल आर्थिक भ्रष्टाचार नहीं, इस देश में जो सामाजिक भ्रष्टाचार है, राजनीतिक भ्रष्टाचार है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, अब आप आपनी बात समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान : मैं सभ्य समाज के लोगों से पूछना चाहता हूं कि आजादी के 64 सालों में जो सामाजिक भ्रष्टाचार हुआ, उस पर क्या आपने कभी विचार किया? मैं यह भी कहना चाहता हूं कि वे लोग यह कहने वाले कौन होते हैं कि इस संसद में कौन दागी है और कौन बेदागी है। ...(व्यवधान) इसी संसद के सांसदों ने जो अधिकार दिया है ...(व्यवधान) अन्ना टीम के लोगों, सभ्य समाज के लोगों से कोई प्रमाण पत्र संसद को नहीं चाहिए। ...(व्यवधान) बल्कि यह विचार न्यायपालिका को हो। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : दारा सिंह जी, आपकी बात पूरी हो गयी, इसलिए अब आप समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री दारा सिंह चौहान : अध्यक्ष महोदया, मैं कहना चाहता हूं कि ऐसे लोगों के खिलाफ कड़े से कड़ा निंदा प्रस्ताव पारित होना चाहिए। ...(व्यवधान) तब जाकर इस मुल्क में एक सही संदेश जायेगा। ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Thambiduraiji, you just associate yourself.

DR. M. THAMBIDURAI (KARUR): Madam Speaker, Shri Sharad Yadav has raised a very important issue. Every citizen of the country has a right to express his views and there is nothing wrong in it. But at the same time one cannot criticize the highest forum of democracy, that is, the elected bodies. It is very important.

Even now many Members are traveling by ferry; they are not rich people. When you see how the Members are reaching their residences, you can realize their position. But criticizing the Members of Parliament is not good.

I would like to request you that we have to pass some kind of a Resolution and see that the people, who are attacking the highest forum of the country, are punished.

श्री शरीफुद्दीन शारिक (बारामुला): ऑनरेबल स्पीकर साहिबा, आपने मुझे इस मसले पर बात करने की इजाजत दे दी, उसके लिए मैं तहे दिले से आपका शुक्रिया अदा करता हूं। शायद मुझे पहली बार लगा कि इस मुल्क के बुजुर्गों ने, रहनुमाओं ने एक सौ साल तक कुर्बानियां देकर आईन और जमहूरियत का मंदिर, यह इबादतगाह हमें अता की है। ...(व्यवधान) आज हमें लग रहा है कि कुछ लोग इस मंदिर को दरहम-बरहम करना चाहते हैं। ...(व्यवधान) 'कुछ और तबाही से गुजरेगी अभी दुनिया, जंजीर अगर तुमने * न पहनाई।' यह शेर मैं आपकी खिदमत में पेश करता हूं। वहां अनाप-शनाप बका जा रहा है कि इस हाउस में *...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Please do not use unparliamentary words.

श्री शरीफुद्दीन शारिक : मैं एक मिनट में अपनी बात खत्म कर रहा हूं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : यह क्या हो रहा है? शारिक जी, आपकी बात पूरी हो गयी है। आपने अपनी भावनायें व्यक्त कर दी हैं, इसलिए अब आप समाप्त कीजिए। आप समय का भी ध्यान रखिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरीफुद्दीन शारिक : मैं एक सैकिंड में अपनी बात समाप्त कर रहा हूं। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : ठीक है, आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरीफुद्दीन शारिक : वहां लीडरशिप के खिलाफ, इस हाउस के वकार के खिलाफ अनाप-शनाप बका जा रहा है। कोई * क्या वाल है, मुझे नहीं मालूम। ...(व्यवधान)

MADAM SPEAKER: Please do not use unparliamentary words.

...(*Interruptions*)

अध्यक्ष महोदया : शारिक साहब, ऐसे मत कहिए।

â€¦(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : शारिक साहब, आप अनपार्लियामैंट्री वर्ड मत यूज़ कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरीफुद्दीन शारिक : वे बोलते रहते हैं। ...(व्यवधान) उन्होंने यह भी कहा ...(व्यवधान)

चंद लीडरों के नाम लेकर कहा। उनके नाम लेकर वहां बदनामी की जिसमें डॉ. फारुख अब्दुल्ला का नाम उन्होंने ले लिया।...(व्यवधान) मैं उन्हें चैलेंज करता हूं कि अगर वे एक पांच पैसे का सिक्का फारुख अब्दुल्ला साहब के खिलाफ साबित कर दें, तो हम सियासत छोड़ देंगे, हम इस पार्लियामैंट को छोड़कर चले जायेंगे। वे गैरजिम्मेदार लोग, जो वहां वायदे करते हैं और दिन-रात, मैं ऐसे अल्फाज नहीं कहता, लेकिन आप यहां हमेशा मुझे ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : शारिक साहब, आपकी बात पूरी हो गयी है, इसलिए आप मेहरबानी करके तशरीफ रखिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री शरीफुद्दीन शारिक : मैं उनसे यह गुजारिश करूंगा कि दिखावे की इबादत कर रहा है, खुदा से भी सियासत कर रहा है। ...(व्यवधान)

DR. FAROOQ ABDULLAH (SRINAGAR): Madam Speaker, I want to say more than this. शरद जी ने मेरा नाम लिया। शरद जी, मुझे

अफसोस इसलिए आता है कि हम वतन की खिदमत करने के लिए आते हैं, गालियां सुनने के लिए नहीं आते हैं। ...(व्यवधान) मगर अफसोस इस बात का है कि चोरी कोई और करे और जेल मे कोई और भुगते। मुसीबत तो यह है कि जो कुछ जानते नहीं हैं, वही उंगलियां उठाते हैं और यह भूल जाते हैं कि जब वे किसी पर उंगली उठाते हैं, तो ये तीन उंगलियां उनकी तरफ भी देखती हैं। मैं संसद में इस बात के बारे में आप सभी से कहना चाहता हूं कि अगर एक पैसा भी फ़ारूख़ अब्दुल्ला पर चढ़ा, तो फ़ारूख़ अब्दुल्ला न सिर्फ यह संसद छोड़ देगा, फ़ारूख़ अब्दुल्ला सियासत से निकल जाएगा।

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (CHENNAI NORTH): Madam Speaker, while associating with the sentiments and anger expressed by the hon. Members here, I think that the crowd which had gathered there had made these people to speak like this. Jokers would act more when the crowd is huge. They will act more when the crowd gathered is more in number. Here, I only wish to endorse the views expressed by Shri Mulayam Singh Yadav that he should be called before the Privileges Committee and the Privileges Committee should inquire into this matter to keep up the prestige of this House. With these words, I conclude.

श्री नामा नागेश्वर राव (खम्मम): मैडम, डेमोक्रेसी में ऑगस्ट हाउस के बारे इस प्रकार से बोलना ठीक नहीं है। इस बारे में शरद यादव जी ने जो प्रस्ताव रखा है, उसके साथ मैं पूरी तरह एसोशिएट करता हूं।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह (वैशाली): महोदया, संसद की गरिमा सर्वोच्च है, संसद की महिमा पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए, संसद को पूरा अधिकार भी प्राप्त है अपनी गरिमा-महिमा की रक्षा करने का। संसद संवैधानिक संस्था है और संविधान में ही प्रावधान है विशेषाधिकार का कि माननीय सदस्यों की गरिमा की रक्षा करना, सदन की गरिमा की रक्षा करना इसके अधिकारक्षेत्र में है, महोदया, यह आपके हाथ में है। कुछ दिनों से मैं देख-सुन रहा हूं कि संसद के खिलाफ कुछ सिरफिरे लोग इधर-उधर बोलते रहते हैं। यह ठीक नहीं है। देश की जनता, आम लोग उसे पसंद नहीं करते। लेकिन हम में भी ऐसे लोग हैं, जो जंतर-मंतर पर चले जाते हैं। यहां हमारी जगह है, जनता ने चुनकर भेज दिया, जंतर-मंतर पर भी बुलाने पर जाते हैं और वहां लोगों की भीड़ का फायदा उठाने के लिए लोग चले जाते हैं, एक बार नहीं, दो-तीन बार चले गए। रामलीला मैदान सभी जगह गए और यहां आकर एकतरफा भाषण चलाए जा रहे हैं।

महोदया, कभी-कभी वाजिब भी बोलना चाहिए। संसद में प्रस्ताव पारित हुआ तीन तारीख को, सर्वसम्मति से, फिर ना-ना करते हैं। ...(व्यवधान) लोकपाल और लोकायुक्त बिल को हम पार्लियामेंट से कानून के रूप में पास करेंगे, फिर जब वह कानून आया, तो फेडरल स्ट्रक्चर की बात करने लगे, राज्य का कैसे बनेगा, कहने लगे। सर्वसम्मत प्रस्ताव पास किया सबने बेंच थपथपाकर, लेकिन जब बिल आया, तो फेडरल स्ट्रक्चर-फेडरल स्ट्रक्चर की बात करने लगे। बाहर में लोग क्या कमेंट करेंगे? अपना भी सोचना चाहिए। फ़ारूख़ अब्दुल्ला साहब बोल रहे थे जैसे तीन उंगलियां अपनी ओर देखती हैं, उसी तरह हम लोगों को अपने में भी देखना चाहिए। संसद की गरिमा की रक्षा करने का सबसे प्राथमिक दायित्व हम लोगों का है। बाहर वाले लोग क्या करेंग? संविधान ने हमको अधिकार दिया है। जनता के हित की संसद दर्पण है। देश की जनता का यह प्रतीक है। प्रतीक है लोकतंत्र का, इसे कोई हिला नहीं सकता। अब किसी ने खिलाफ में कुछ बोल दिया, तो उसे लोग इतना तूल दे रहे हैं, उसको इतना तूल दे रहे हैं।

दुंद आघात सहहिं गिरि कैसे, खल के वचन संत सह जैसे।

श्री हुकमदेव नारायण यादव (मधुबनी): जो नहीं दंड देई समतोय, ...(व्यवधान)

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसमें अतुल गरल हो, उसे नहीं जो दंतहीन विषरहित विनीत सरल हो।। क्षमा बड़ेन को चाहिए, छोटन को अपराध। महोदया, हमारे पास अधिकार है, यदि विशेषाधिकार का कोई प्रस्ताव यहां पर आएगा तो उस पर कार्यवाही होगी, पहले भी कार्यवाही होती रही हैं। लेकिन इसे इतना तूल नहीं देना चाहिए, बल्कि हमें यहां पर जनता की समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए। इस तरह से जो कमेंट्स बाहर दिए जाते हैं, ... *लोग बोलते हैं, उन पर ध्यान नहीं देना चाहिए।

अध्यक्ष महोदया: श्री सिंह अगर कोई शब्द असंसदीय बोल रहे हैं, तो वह रिकार्ड से हटा दिया जाए। अब आप बैठ जाएं।

डॉ. रघुवंश प्रसाद सिंह : अगर 400-500 लोग अनशन पर बैठते हैं, उनकी कोई नहीं सुन रहा है, मामला कुछ नहीं है और ये उसी को तूल दे रहे हैं। इसलिए इस सबको ठीक किया जाए।

श्री आनंदराव अडसुल (अमरावती): अध्यक्षा जी, मैं आपका आभारी हूं। कल प्रतिपक्ष की नेता आदरणीय सुषमा जी ने, आदरणीय शरद यादव जी और अन्य साथियों ने एक मुद्दा उठाया। ... *और उनके साथियों ने संसद का जो घोर अपमान किया है, उस बारे में संसद में एक अलग जागृति आई, इसके लिए मैं इन सभी को धन्यवाद देता हूं। सही मायने में अण्णा हज़ारे को बड़ा करने का काम सत्ताधारी पक्ष ने किया। अगर उनके अनशन को परमिशन दे देते, अरैस्ट नहीं करते तो शायद ...* इतने बड़े नहीं होते।

अध्यक्ष महोदया: आप बिना नाम लिए बोलिए। आप संसद में बोल रहे हैं इसलिए संसद की गरिमा का ध्यान रखिए और फिर बोलिए। The name will be

deleted.

श्री आनंदराव अडसुल : सरकार ने, बड़े-बड़े नेता जो थे, उन्हें नहीं बुलाया, लेकिन ...* को बुलाया।

अध्यक्ष महोदया: फिर आप नाम ले रहे हैं। मैं आपसे कुछ कह रही हूं उस पर आप ध्यान दीजिए।

श्री आनंदराव अडसुल : इसलिए उन्हें ऐसा लगा कि मैं सबसे बड़ा हूं। उनकी यह मानसिकता क्यों बनी, उन्हें इतना महत्व देने के कारण ही उन्हें लगा कि मैं सांसद से भी बड़ा हूं। इसलिए वह घोर अपमान करने का काम कर रहे हैं, वह और उनके साथी। जो भी यहां प्रस्ताव कि ... *को या उनके साथियों को...

अध्यक्ष महोदया: आप फिर नाम ले रहे हैं। आप देखिए, संसद की गरिमा पर कोई आंच नहीं आनी चाहिए।

श्री आनंदराव अडसुल : नाम तो सब जाहिर है, इसमें क्या है। उन्हें यहां बुलाना चाहिए, समझाना चाहिए और माफी मांगने की भी उनसे बात होनी चाहिए।

MADAM SPEAKER: Hon. Members, as is well known, Members of this House undergo a rigorous scrutiny by the Election Commission under the provisions of the Representation of the People Act, Model Code of Conduct and other legal requirements while they file their nominations for the Lok Sabha elections. After meticulously assessing their conduct and performance, the people of India in their wisdom elect them. The Parliament, therefore, reflects the collective will of the people of our country.

Any remark lowering the dignity and esteem of this august House is unwarranted and totally unacceptable.

MADAM. SPEAKER: The House will now take up 'Zero Hour'.

Dr. Shrimati Botcha Jhansi Lakshmi.